गिरीश कर्नाड द्वारा रचित "हयवदन" नाटक के उपाख्यान में नियति की विडंबना और पूर्णांग की अभिलाषा

-डॉ.सुनील गुलाबसिंग जाधव,
हिन्दी विभाग, यशवंत महाविद्यालय, नांदेड़
स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड़, महाराष्ट्र (भारत)

Submission Date: 06 Oct 2025 **Approval Date:** 07 Nov 2025 **Release Date:** 10 Nov 2025

सारांश :

गिरीश कर्नाड द्वारा रचित "हयवदन" नाटक नियति की विडंबना से उपजा अपूर्णता से पूर्णता की अभिलाषा रखता हैं। नाटक के उपाख्यान में एक साथ तीन -तीन पात्र नियति की विडंबना का शिकार होते हैं। पहला गंधर्व जो कुबेर के शाप से घोड़ा बन जाता है। दूसरा उपाख्यान के प्रमुख पात्र हयवदन की माँ है, जो कुबेर के शाप से बने घोड़े के साथ विवाह करती है। उसे पंद्रह साल अपना प्रेम देती है। जिससे वह श्राप मुक्त हो जाता है। और गंधर्व बन जाता है और उसे इंद्रलोक लेकर जाना चाहता है किन्तु हयवदन की माँ अर्थात कर्नाटक की राजकुमारी उसे घोड़े रूप में देखना चाहती है। जिस कारण गंधर्व उसे शाप देकर घोड़ी बना देता है और उसे छोड़ कर इन्द्रलोक चला जाता है। वहीं तीसरा पात्र घोड़ी माँ से उत्पन्न आधा घोड़ा और आधा मानव हयवदन है। जो आजीवन पूर्णता की तलाश करता रहता है।

संकेत शब्द : गिरीश कर्नाड, हयवदन, उपाख्यान, नियति, विडंबना, पूर्णांग, अभिलाषा।

कवि, नाटककार, निदेशक, दिग्दर्शक, अभिनेता आदि बहु आयामी प्रतिभा सम्पन्न गिरीश कर्नाड द्वारा रचित विश्व प्रसिद्ध नाटक 'हयवदन' एक ओर नियति की विडंबना को दर्शाता है तो दूसरी और पूर्णांग के अभिलाषा की यातना, संघर्ष, अंतर्द्वंद्व, अंतर एवं बाह्य मनोभूमि के पीड़ा की हृदय स्पर्शी त्रासदी को अभिव्यक्त करता है। नाटक के हयवदन के उपाख्यान के माध्यम से नियति की विडम्बना और पूर्णांग की अभिलाषा की सशक्त अभिव्यंजना को देखा जा सकता है। कथावस्तु के सारे गतिमान पात्र किसी न किसी अधूरे पन से ग्रसित पूर्णता के लिए संघर्ष करते हैं पर नियति की विडम्बना के आगे पराजित हो कर अधूरी अतृप्त आकांक्षा के साथ गतिहीन हो जाते है।

हयवदन के उपाख्यान में हयवदन एवं उसके माता-पिता की कथा का आरम्भ भी कुछ इस प्रकार होता है कि उसे देख-पढ़ कर ऐसा लगता है कि नियति ने अपना खेल आरंभ कर दिया है। सारे पात्र मानो नियति के हाथ की कठपुतली हो और वह बखूबी एक के बाद एक पात्रों को अपना शिकार बनाती हुई नजर आती है। एक नियति के शिकंजे से छूटा नहीं कि दूसरा नियति की यातना - पीड़ा को सहने के लिए तैयार दिखाई देता हैं। उपकथा पर चिन्तन-मनन करने से ज्ञात होता है कि पात्रों के साथ इस प्रकार का व्यवहार कर नियति के आनंद प्राप्ति की अभिलाषा अभी पूर्ण ही नहीं हुई हैं। लगता है कि वह भी अधूरे पन से ग्रसित है। वह भी पूर्णता की अभिलाषा रखते हैं।

नाटककार ने मंगलाचरण में गणेश जी की वंदना कर उनके नख-शिख अपूर्णांग की और संकेत कर रहस्य को अभिव्यक्त करने में असमर्थ दिखाई देते है।" **अब अपने वक्रशुंड महाकाय की महिमा का क्या बखान करें ? जिनका चेहरा हो हाथी जैसा, शरीर हो मनुष्य जैसा, दाँत हो टूटा-टूटा, पेट हो फटा-फटा। जो नख से शिख तक ऐसे परिपूर्ण अपूर्णांग हों, वे आखिर किस अपूर्णता का संकेत देते है ? और यह कैसा रहस्य है कि ऐसे अपूर्णांग प्रभु ही विघ्न हर्ता कहलाये ? परंतु प्रभु लीला का**

कौन पार पावे !" १ नाटककार स्वयं नियति के रहस्य को जानने में असमर्थ दिखाई देते है । हयवदन की उपकथा की विडम्बना और पूर्णांग की अभिलाषा की ओर मंगलाचरण में ही संकेत करते हुए नजर आते है।

उपकथा का आरम्भ भागवत कथाकार के मुख्य कथा के आरम्भ करने के पश्चात बीच में ही हो जाता है। नट द्वारा संकेत प्राप्त होता है। मंच पर हयवदन का उपपटी के पृष्ठभूमि में आगमन होता है और भागवत के साथ संवादों में विकसित होते हुए गतिमान हो जाता है। नाटककार ने यहाँ हास्य-व्यंग्य शैली के प्रयोग के साथ कथा की रोचकता बनाये रखने में सफलता प्राप्त की है। हयवदन का धीरे-धीरे शिख से लेकर नख तक दर्शकों के सम्मुख प्रस्तुत करना, जिज्ञासा में वृद्धि करता है। हयवदन जिसका मस्तक घोड़े का है। और देह मनुष्य का। कथा के विकास में हयवदन की चारित्रिक विशेषता उजागर होते जाते ही। भागवत एवं नट द्वारा हयवदन के मस्तक को नकली समझकर खींचना और हयवदन का सबकुछ सहन करना उसकी सहनशीलता एवं पूर्णांग की अभिलाषा को दर्शाता है। " **भरोसे पर ही तो जीता है जीव। मैं तो सब कुछ करके हार चुका था। बस इच्छा थी किसी तरह इस घोड़े के मुँह से पीछा छूटे। सुना शायद आप जैसे पुण्यात्माओं के हाथ मेरा उद्धार हो जाये। आप इसे उतार फेंकें ...।"२** हयवदन दुर्भाग्यशाली है। जन्म से ही उसे घोड़े का सर और देह मनुष्य का प्राप्त हुआ है ।

हयवदन के जन्म की कथा भी बड़ी रोचक है । हयवदन की माता कर्नाटक की राजकुमारी थी। उसका स्वयंवर रखा जाता है। जहाँ विश्व के कोने-कोने से राजकुमार स्वयंवर में भाग लेने आते है। हयवदन अपने जन्म की कथा सुनाते हुए कहता है, " **मेरी माँ कर्नाटक की राजकुमारी थी। वह बड़ी सुन्दर थी। जब वह सयानी हुई की उसके पिता ने बेटी के लिए स्वयंवर रचा जिसमें दूर-दूर के राजकुमार आये। चीन से, रूम से, फ्रांस से। लेकिन राजकुमारी को उनमें से कोई नहीं भाया। अंत में सौराष्ट्र का राजकुमार वहाँ आया जो बड़े-से सफेद घोड़े पर सवार था, जिसको देखते ही राजकुमारी अचेत हो गयी ।" ३** राजकुमारी के पिता इस बात से प्रसन्न थे कि अब उनकी पुत्री का विवाह उसके पसंद के राजकुमार हो जाएगा किन्तु नियति का खेल अब आरंभ हो जाता है। जब उसे होश आता है तब वह कहती हैं,- **" मैं तो उस सफेद घोड़े से ही ब्याह करूँगी।"** ४ राजकुमारी को राजकुमार के बजाय वह घोड़ा पसंद आने लगता है, उसकी मति पर नियति ने परदा ही डाल दिया था।

राजकुमारी का विवाह उस घोड़े के साथ बड़े ही धूमधाम से किया जाता है। पन्द्रह वर्षों तक उनकी गृहस्थी ठीक-ठाक चलती है। किन्तु पन्द्रह वर्षों के बाद घोड़े का अचानक गायब होना और उसके स्थान पर एक गंधर्व का खड़ा होना। जीवन में घट रही घटनाओं को मोड़ने लगता है। कुबेर के शाप से गंधर्व से बना घोडा पन्द्रह वर्षों तक राजकुमारी का प्रेम पाकर शाप मुक्त होता है। " **एक दिन सवेरे उठकर माँ ने देखा, घोड़े का कहीं पता नहीं । उसकी जगह एक गंधर्व खड़ा था जो कहते है, राजा कुबेर के शाप से घोड़े की योनि में जन्मा था और अब पन्द्रह वर्ष मनुष्य का प्रेम पाकर शाप से मुक्त हो गया था ।"४** एक और कुबेर के शाप से ग्रसित गंधर्व जीवन भर वह सोचता रहा होगा कि मुझे शाप से मुक्ति कब मिलेंगे। अपने कार्य पर उसे पश्चाताप हुआ होगा। जब उसे शाप से मुक्ति मिलती है तो उसके आनंद की कोई सीमा नहीं रहती है । वह पुनः इंद्रपुरी वापस लौट जाना चाहता है । साथ में राजकुमारी को ले जाना चाहता है, "**शाप से मुक्त मेरे गंधर्व पिता ने इंद्रपुरी की ओर चलते-चलते माँ से कहा, तुम भी मेरे साथ चलो।"५** लेकिन राजकुमारी इनकार करती है । वह इक शर्त पर चलना चाहती है, " **घोड़े का ही रूप फिर धरोगे तो चलूँगी ।**" ६ इस पर गंधर्व उसे शाप देता है । **"जा, तू हमेशा के लिए घोड़ी बन जा । बस, मेरी माँ उसी क्षण घोड़ी बन गयी। मैं अकेला बच गया- उनके**

अटपटे संयोग से उपजा पूत- आधा घोडा, आधा मनुष्य ।" ७ एक के बाद एक नियति की विडम्बना दिखाई देती है। घोडा जो पुनः गंधर्व बनाना चाहता था। वह शाप मुक्त हो जाता है। और राजकुमारी को साथ में इंद्रपुरी ले जाना चाहता है। पर राजकुमारी पुनः उसे घोड़े के ही रूप में चाहती है। क्रोध में राजकुमारी को घोड़ी बनने का शाप दे देता है। आजीवन उसे घोड़ी बनकर जीवन बिताना पड़ता है। और नियति की विडम्बना देखें कि जिसकी कोई गलती नहीं थी, जो निष्कलंक था। जिसने अभी बाहर की दुनिया में कदम तक नहीं रखा था। उनके विचित्र पुत्र का जन्म होता है। उनकी विडम्बना और विचित्रता पूर्ण जीवन का प्रतीक हयवदन। आधा घोडा और आधा मनुष्य।

जीवन भर अपने अपूर्णांग से उत्पन्न यातना, पीड़ा को भुगतता हुआ दिखाई देता है। नियति ने उसके साथ किए मजाक को भुलाने के लिए वह अपना मन समाज कार्य, देश प्रेम, राष्ट्रीय एकता में लगाता है। हयवदन स्वयं कहता है, **" मेरा निजी जीवन निष्कलंक रहा है। इसीलिए सार्वजनिक जीवन में दिलचस्पी ली, नागरिक धर्म, देश-प्रेम, राष्ट्रीय एकता, भारतीयकरण, समाजवाद, सब में भाग लेता रहा पर मेरा कौन- सा समाज है ? मेरी क्या हस्ती है। भागवत जी मुझे कुछ-न-कुछ करना ही होगा । मुझे पूर्ण मनुष्य बनना है, पूर्णांग होना है ।" ८** उसके मुख से उत्पन्न मेरा कौन-सा समाज है ? मेरी क्या हस्ती है ? उसके असहाय दुःख, पीड़ा, यातना को अभिव्यक्त करता है। उसका अब तक का जीवन त्रासदी पूर्ण रहा है। अक्सर ऐसा होता है कि कोई गलती ना होने के बावजूद भी उसे सजा मिलती है और उसे जीवन भर लादी हुयी सजा भुगतनी पड़ती है। हयवदन भी ऐसा ही पात्र है, जिसकी कोई गलती ना होने के बावजूद भी उसे सजा मिलती है। वह न पशु बनकर जीवन जी सकता है और ना मानव बन के। उसके लिए तो यह दुनिया मात्र उस पर ताना कसने वाली, हिकारत से देखने वाली, हास्य-व्यंग्य करने वाली ही है। ऐसी परिस्थिति में कोई कैसे जी सकता है। जी लेने के लिए बहुत बड़े हृदय की और साहस, धैर्य की आवश्यकता है।

निष्कर्षत :

यह कहा जा सकता है कि पूरा नाटक नियति की विडंबना से उपजा अपूर्णता से पूर्णता की अभिलाषा रखता हैं। नाटक के उपाख्यान में एक साथ तीन -तीन पात्र नियति की विडंबना का शिकार होते हैं। पहला गंधर्व जो कुबेर के शाप से घोड़ा बन जाता है। दूसरा उपाख्यान के प्रमुख पात्र हयवदन की माँ है, जो कुबेर के शाप से बने घोड़े के साथ विवाह करती है। उसे पंद्रह साल अपना प्रेम देती है। जिससे वह श्राप मुक्त हो जाता है। और गंधर्व बन जाता है और उसे इंद्रलोक लेकर जाना चाहता है किन्तु हयवदन की माँ अर्थात कर्नाटक की राजकुमारी उसे घोड़े रूप में देखना चाहती है। जिस कारण गंधर्व उसे शाप देकर घोड़ी बना देता है और उसे छोड़ कर इन्द्रलोक चला जाता है। वहीं तीसरा पात्र घोड़ी माँ से उत्पन्न आधा घोड़ा और आधा मानव हयवदन है। जो आजीवन पूर्णता की तलाश करता रहता है।

नाटक समाज को नियति की विडंबना से दुखी लोगों को अपने समान दुखी पत्रों को दिखाकर उन्हें जीवन जीने की एक प्रकार से प्रेरणा ही देता हुआ नजर आता हैं। समाज में मनुष्य अपने जीवन में कई कमियों के साथ जीवन जीता हैं, और उस कमी के कारण जीवन भर दुख मनाता है। यह नाटक प्रत्येक मनुष्य को नियति से मिले कमी को स्वीकार कर जीने का संदेश देता हैं।

संदर्भ-

(1) हयवदन -गिरीश कर्नाड, प्रकाशक: राधाकृष्ण प्रकाशन, प्रकाशित वर्ष:2006,पृष्ठ : 14
(2) हयवदन -गिरीश कर्नाड, प्रकाशक: राधाकृष्ण प्रकाशन, प्रकाशित वर्ष:2006,पृष्ठ :15
(3) हयवदन -गिरीश कर्नाड, प्रकाशक: राधाकृष्ण प्रकाशन, प्रकाशित वर्ष:2006,पृष्ठ :15
(4) हयवदन -गिरीश कर्नाड, प्रकाशक: राधाकृष्ण प्रकाशन, प्रकाशित वर्ष:2006,पृष्ठ :13
(5) हयवदन -गिरीश कर्नाड, प्रकाशक: राधाकृष्ण प्रकाशन, प्रकाशित वर्ष:2006,पृष्ठ :15
(6) हयवदन -गिरीश कर्नाड, प्रकाशक: राधाकृष्ण प्रकाशन, प्रकाशित वर्ष:2006,पृष्ठ :14
(7) हयवदन -गिरीश कर्नाड, प्रकाशक: राधाकृष्ण प्रकाशन, प्रकाशित वर्ष:2006,पृष्ठ :16
(8) हयवदन -गिरीश कर्नाड, प्रकाशक: राधाकृष्ण प्रकाशन, प्रकाशित वर्ष:2006,पृष्ठ :15